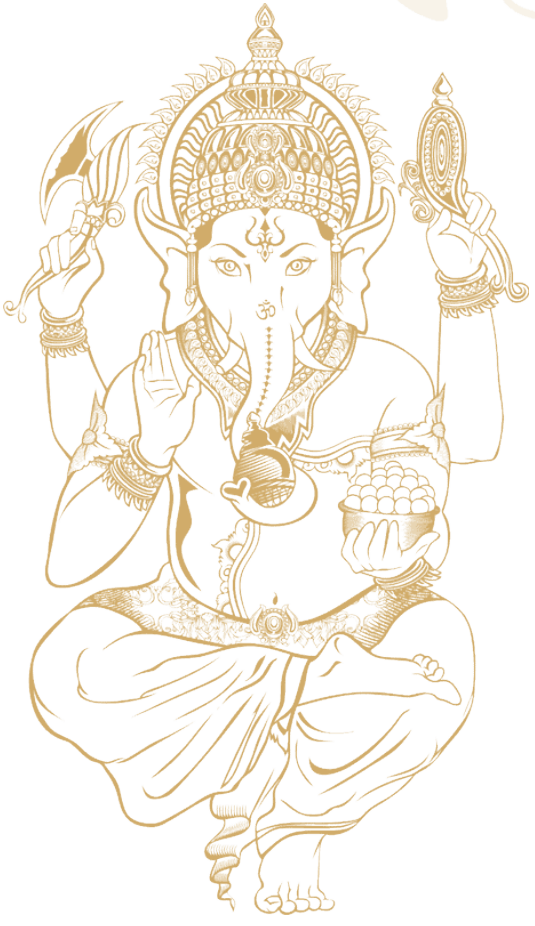

Dr satish kumar

01 Aug 1981

07:00 AM

Siwan

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120813701**

तिथि 01/08/1981 **समय** 07:00:00 **वार** शनिवार **स्थान** Siwan **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:35:46
अक्षांश 26:14:00 उत्तर **रेखांश** 84:21:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:07:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:45:43 घं
वेलान्तर	00:06:17 घं
सूर्योदय	05:18:00 घं
सूर्यास्त	18:39:23 घं
चैत्रादि संवत	2038
शक संवत	1903
मास	श्रावण
पक्ष	शुक्ल
तिथि	1
नक्षत्र	आश्लेषा
योग	व्यतिपात
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डे-डेविड
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	गुरु
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

बुध 4वर्ष 3मा 16दि

चन्द्र

16/11/2018
16/11/2028

चन्द्र	17/09/2019
मंगल	17/04/2020
राहु	17/10/2021
गुरु	16/02/2023
शनि	16/09/2024
बुध	16/02/2026
केतु	17/09/2026
शुक्र	17/05/2028
सूर्य	16/11/2028

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 0मा 3दि

उल्का

05/08/2023
05/08/2029

उल्का	04/08/2024
सिद्धा	04/10/2025
संकटा	03/02/2027
मंगला	05/04/2027
पिंगला	05/08/2027
धान्या	04/02/2028
भ्रामरी	04/10/2028
भद्रिका	05/08/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:28:16	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	---	0:00			
सूर्य			15:07:14	कर्क	पुष्य	4	शनि	गुरु	मित्र राशि	1.68	मातृ	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			26:37:55	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	गुरु	स्वराशि	1.19	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			15:34:54	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	शुक्र	शत्रु राशि	1.37	अमात्य	भ्रातृ	वध
बुध			04:58:05	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	शत्रु राशि	1.03	कलत्र	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			12:31:46	कन्या	हस्त	1	चंद्र	राहु	शत्रु राशि	1.15	पुत्र	धन	प्रत्यारि
शुक्र			15:25:08	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि	1.02	भ्रातृ	कलत्र	विपत
शनि			11:58:06	कन्या	हस्त	1	चंद्र	राहु	मित्र राशि	1.42	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		08:06:29	कर्क	पुष्य	2	शनि	केतु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		08:06:29	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

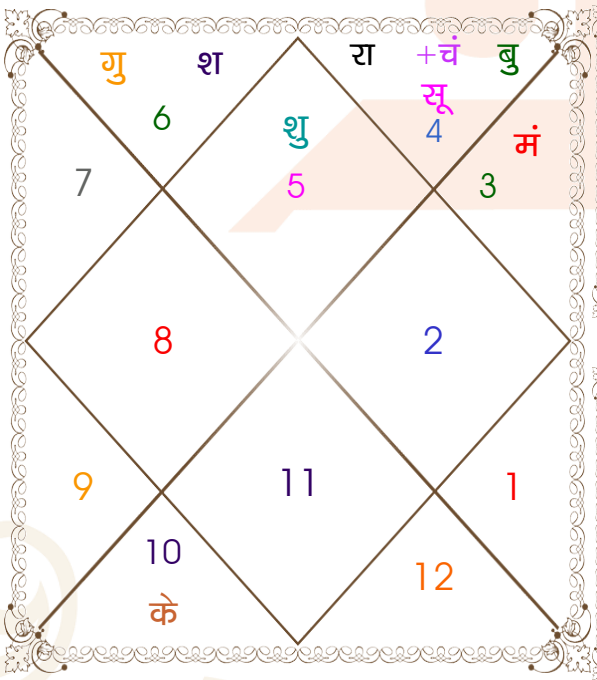

चन्द्र कुंडली

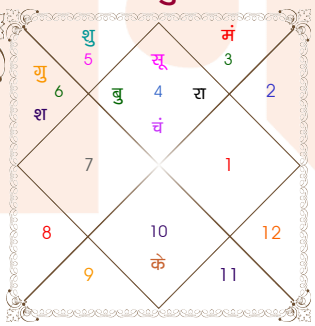

नवमांश कुंडली

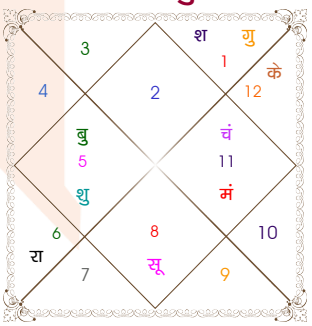

सर्वाष्टकवर्ग

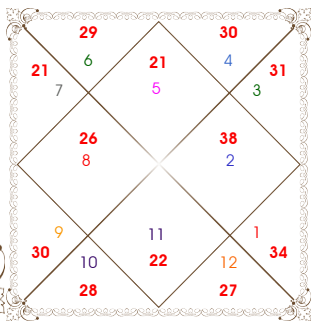

दशमांश कुंडली

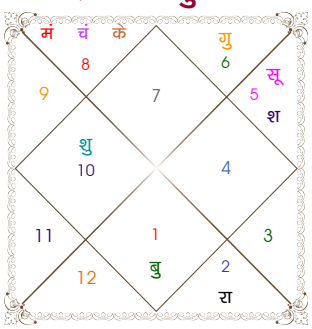

नक्षत्रफल

आप आश्लेषा नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग श्वान, नाड़ी अन्त्य, योनि मार्जार तथा राक्षस गण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम "डे" से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों के अर्न्तगत की जाती हैं। अतः इस नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आप माता के लिए कष्टकारी होंगे। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रोक्त रीति से शान्ति करवानी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करवाएं तथा 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आए तो इस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करें तभी शान्ति होगी तथा कष्टयोग भी समाप्त होगा। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाना चाहिए।

मंत्र – ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप अपने जीवन काल में भ्रमण एवं यात्रा करने में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगे। आपकी चेष्टायें उग्रता से पूर्ण होंगी तथा अपनी इन उग्र चेष्टाओं से समाज के अन्य लोगों को यदा कदा परेशान करेंगे। धन की आपके पास न्यूनता नहीं रहेगी परन्तु अपने धन को अनावश्यक रूप से शीघ्र ही व्यय करेंगे। साथ ही आप विलासी प्रवृति के पुरूष भी होंगे।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आप प्रायः आकषित रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। साथ ही आप अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उनके द्वारा किए गये कार्यों का श्रेय उन्हे अल्प ही प्रदान करेंगे।

लुब्धः खञ्जः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।
आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगडा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यो को करने वाला होता है।

आप सात्विक तथा तामसिक दोनों प्रकार के भोजनों का आस्वादन करेंगे तथा भक्ष्य अभक्ष्य का कोई भेद नहीं रखेंगे। आपके कार्य कठोर भी होंगे जिससे अन्य जनों को यदा कदा असुविधा होगी। अवसरानुकूल आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय लेते रहेंगे।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यो को करने वाला होता है।

आपमें ज्ञान तथा बुद्धि का भाव मध्यम रूप से विद्यमान रहेगा तथा आप कृतज्ञता पूर्ण शब्दों का भी प्रयोग करेंगे। आपको क्रोध भी शीघ्र एवं अधिक मात्रा में आएगा। इसके साथ ही आपका चाल चलन भी सामान्य रहेगा। समाज या अन्य जनों से आप को मान सम्मान या सहानुभूति जीवन में प्राप्त होती रहेगी।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यो पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यो पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

कर्क राशि में जन्म लेने के कारण आप का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपने कार्यो को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने में हमेशा सक्षम रहेंगे तथा बहुत सी धन दौलत को अर्जित करके समाज में धनाढ्य बनेंगे। आपके पराक्रम को सभी लोग मानेंगे तथा शीघ्र ही आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। आप पूर्ण रूप से धर्मनिष्ठ रहेंगे तथा समस्त धार्मिक

कार्यकलापों को श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करेंगे। अपने श्रेष्ठजनों तथा गुरूजनों के आप हमेशा स्नेह पात्र रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग की आपको प्राप्ति होती रहेगी। आपकी बुद्धिमता से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। लेकिन कभी कभी आप में क्रोधाधिक्य की भावना उत्पन्न होगी एवं आप अपने को सबसे दुःखी प्राणी के रूप में अनुभव करेंगे। आपके सभी मित्र सद्गुणों से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य कार्यों तथा कलाओं के विषय में भी ज्ञान रखने वाले होंगे। शारीरिक रूप से आप मध्यम बली रहेंगे तथा आपको अपने वास्तविक गृह में अनासक्ति रहेगी तथा आप अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से प्रवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रवृति वातकफ से युक्त रहेगी। आपका रूप अलौकिक सौन्दर्य से युक्त होकर तेजस्वी रहेगा। साथ ही अपने बुद्धिबल तथा परिश्रम से अजित धन से धनवान बनेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं की आप हार्दिक सेवा तथा सत्कार करने में तत्पर रहेंगे। उच्चकुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा इनकी सेवा करने में आप अत्यन्त ही शान्ति का अनुभव करेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के ज्ञान प्राप्त करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक आप इस कार्य में परिश्रम से सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य कलाओं के विषय में भी आपको ज्ञान रहेगा। आप सदाचारी होंगे तथा सभी लोग आपके श्रेष्ठ आचरण की प्रशंसा करेंगे। फूलों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करने से आप परम संतुष्टि की अनुभूति करेंगे। साथ ही अपनी बुद्धि से आप समाज में विख्यात एवं कीर्ति शाली पुरूष होंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

स्त्री के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे। आप अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा जलक्रीड़ा से आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे। आपके द्वारा बहुत से भवनों का निर्माण किया जाएगा अथवा आप बहुत से मकानों के स्वामित्व को प्राप्त कर सकते हैं। आप मध्यम कद के होंगे तथा टेढी चाल से शीघ्र गति से चलना आपकी प्रिय प्रवृति होगी। इसके अतिरिक्त संतति संख्या में

पुत्र आपके अल्प संख्या में ही उत्पन्न होंगे।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप जीवन में नाना प्रकार के द्रव्यों तथा सुखों का उपभोग करेंगे। तथा ज्योतिष शास्त्र के भी जानने वाले होंगे। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में संघर्ष करते रहेंगे क्योंकि चन्द्रमा की कलाओं की तरह आप हानि वृद्धि को प्राप्त होते रहेंगे। आपकी एक मुख्य विशेषता यह रहेगी कि आप केवल प्यार से ही वश में रहेंगे तथा कोई भी कार्य करने को तत्पर रहेंगे। इसके विपरीत दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों का आप पूर्ण आदर तथा सम्मान करेंगे। फलतः मित्र वर्ग के आप हमेशा प्रिय रहेंगे। आपकी जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण कार्य में गहन रूचि रहेगी तथा इसका प्रदर्शन भी आप करते रहेंगे।

आवकद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा भाग्यबल से अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में सिद्धि प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप धैर्यशाली होंगे तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। शीघ्रता से कार्य करना आपकी प्रवृति के विरूद्ध होगा। आप यात्राओं तथा भ्रमण में अधिक रहेंगे। अतः अधिकांश समय इन्ही पर व्यतीत होगा। आप स्वभाव से ही विनम्र रहेंगे तथा अन्य जनों से भी विनम्रता का ही व्यवहार करेंगे। कामाग्नि की भी प्रबलता आप में विद्यमान रहेगी तथा आप किसी दूसरे से उपकृत होने पर उसके प्रति कृतज्ञता का भाव अवश्य प्रकट करेंगे। आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित करेंगे। जीवन में आप सत्य तथा मधुर बोलने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

आपका जन्म राक्षस गण में हुआ हैं। अतः आप कभी कभी निरर्थक भाषण करेंगे तथा मन में दया तथा करूणा का भाव भी अल्प मात्रा ही रहेगा। लेकिन साहस तथा धैर्य का आपमें अभाव नहीं रहेगा। अतः आप अधिकांश साहसिक कार्यों को ही सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप क्रोधी स्वभाव के भी होंगे तथा छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगे। अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए आप किसी भी सीमा को भी पार करने

के लिए तैयार रहेंगे। शारीरिक रूप से आप बलवान रहेंगे तथा दूसरे लोगों से वाद विवाद भी प्रायः होते रहेंगे। अतः संयम पूर्वक अन्य लोगों से वार्तालाप करना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते है। आपके चेहरे की सुन्दरता सामान्य ही होगी तथा आप कभी कभी कठोर शब्दों का ही प्रयोग करेंगे। जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः मधुर शब्दों को यत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को आप कुशलता से सम्पन्न करेंगे। मीठा भोजन तथा मीठा पेय आपके प्रिय होंगे। इनका सेवन करने से आप अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। आप भयहीन रहेंगे तथा निर्भयता से अपने जीवन के कार्य सम्पन्न करते रहेंगे। आपके अर्न्तमन में दुष्टता की प्रवृति भी उत्पन्न होगी जिससे आप का मन दुष्कार्यो को करने के लिए भी यदा कदा प्रवृत होगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक

स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण बुधवार, तृतीय प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट कारक होगा। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ एवं कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण आदि कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अच्छा नहीं चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए तथा सोमवार का उपवास करना चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, चांदी,श्वेत वस्त्र, चावल आदि पदार्थों को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।